❍ 17 / 12 / 22 की मुरली से चार्ट ❍

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *अंतरमुखी बनकर रहे ?*

➢➢ *रूहानी बाप की याद में रह भोजन बनाया व खाया ?*

➢➢ *स्वराज्य की स्मृति द्वारा तूफानो को तोहफा बनाया ?*

➢➢ *सदा भरपूरता का अनुभव किया ?*

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *कभी कहीं पर जाओ तो यही लक्ष्य रखो कि जहाँ जायें वहाँ यादगार कायम करें,* वह तब होगा जब आत्मिक प्यार की सौगात साथ होगी। *यह आत्मिक प्यार(स्नेह) पत्थर को भी पानी कर देगा। इससे किसी पर भी विजय हो सकती है।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
✪ *श्रेष्ठ स्वमान* ✪
⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं कल्प-कल्प की अधिकारी आत्मा हूँ"*

〰✧ सदा यह नशा रहता है कि हम ही कल्प-कल्प के अधिकारी आत्मायें है, हम ही थे हम ही हैं, हम ही कल्प कल्प होंगे। कल्प पहले का नजारा ऐसे ही स्पष्ट स्मृति में आता है। आज ब्रह्मण हैं कल देवता बनेंगे। हम ही देवता थे यह नशा रहता है? *हम सो, सो हम यह मंत्र सदा याद रहता है? इसी एक नशे में रहो तो सदा जैसे नशे में सब बातें भूल जाती हैं, संसार ही भूल जाता है, ऐसे इस में रहने से यह पुरानी दुनिया सहज ही भूल जायेगी।* ऐसी अपनी अवस्था अनुभव करते हो? तो सदा चेक करो - आज ब्रह्मण कल देवता, यह कितना समय नशा रहा।

〰✧ जब व्यवहार में जाते तो भी यह नशा कायम रहता कि हल्का हो जाता है? जो जैसा होता है उसको वह याद रहता है। जैसे प्रजीडेन्ट है वह कोई भी काम करते यह नहीं भूलता कि मैं प्रेजीडेन्ट हूँ। तो आप भी सदा अपनी पोजीशन याद रखो। इससे सदा खुशी रहेगी, नशा रहेगा। सदा खुमारी चढ़ी रहे। *हम ही देवता बनेंगे, अभी भी ब्रह्मण चोटी हैं ब्रह्मण तो देवताओंसे भी ऊंच है। इस नशे को माया कितना भी तोड़ने की कोशिश करे लेकिन तोड़ न सके।*

〰✧ माया आती तभी है जब अकेला कर देती है। बाप से किनारा करा देती है। डाकू भी अकेला करके फिर वार करते हैं ना। *इसलिए सदा कम्बाइन्ड रहो कभी भी अकेले नहीं होना। मैं और मेरा बाबा, इसी स्मृति में कम्बाइन्ड रहो।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ (बापदादा ने ड़िल कराई) सभी में रूलिंग पॉवर है? कर्मेन्द्रियों के ऊपर जब चाहो तब रूल कर सकते हो? स्व-राज्य अधिकारी बने हो? *जो स्व-राज्य अधिकारी है वही विश्व के राज्य के अधिकारी बनेंगे।*

〰✧ *जब चाहो, कैसा भी वातावरण हो लेकिन अगर मन-बुद्धि को ऑर्डर दो स्टॉप, तो हो सकता है या टाइम लगेगा?* यह अभ्यास हर एक को सारे दिन में बीच-बीच में करना आवश्यक है।

〰✧ और कोशिश करो जिस समय मन-बुद्धि बहुत व्यस्त है, ऐसे समय पर भी एक सेकण्ड के लिए स्टॉप करना चाहो तो हो सकता है? तो *सोचो स्टॉप और स्टाप होने में 3 मिनट, 5 मिनट लग जाएँ, यह अभ्यास अंत में बहुत काम में आयेगा।* इसी आधार पर पास विद ऑनर वन सकेंगे। अच्छा।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *सबसे सहज बात कौन-सी है, जिसको समझने से सदा के लिए सहज मार्ग अनुभव होगा? वह सहज बात है सदा अपनी ज़िम्मेदारी बाप को दे दो।* ज़िम्मेवारी देना सहज है ना? स्वयं को हल्का करो तो कभी भी मार्ग मुश्किल नहीं लगेगा। मुश्किल तब लगता है जब थकना होता या उलझते हैं। *जब सब ज़िम्मेवारी बाप को दे दी तो फ़रिश्ते हो गये। फ़रिश्ते कब थकते हैं क्या? लेकिन यह सहज बात नहीं कर पाते तब मुश्किल हो जाता। ग़लती से छोटी-छोटी ज़िम्मेवारियों का बोझ अपने ऊपर ले लेते इसलिए मुश्किल हो जाता। भक्ति में कहते थे- सब कर दो राम हवाले। अब जब करने का समय आया तब अपने हवाले क्यों करते?* मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार- यह मेरा कहाँ से आया? *अगर मेरा खत्म तो नष्टोमोह हो गये। जब मोह नष्ट हो गया तो सदा स्मृति स्वरूप हो जायेंगे। सब कुछ बाप के हवाले करने से सदा खुश और हल्के रहेंगे। देने में फिराक दिल बनो। अगर पुरानी कीचड़पट्टी रख लेंगे तो बीमारी हो जायेगी।*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⋆｡˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- टाइम वेस्ट ना कर बाप की याद में रह टाइम आबाद करना"*

➳ _ ➳ एकांत में बैठी मैं आत्मा घडी की टिक-टिक को सुन रही हूँ... घडी की टिक-टिक जैसे कह रही हो समय बड़ा अनमोल, समझो इसका मोल... कोई भी पल खो न जाए, गया समय फिर हाथ न आए... *हर घडी अंतिम घडी की स्मृति से मैं आत्मा इस स्थूल देह को छोड़ सूक्ष्म शरीर धारण कर, इस स्थूल दुनिया को छोड़ सूक्ष्म वतन में प्यारे बाबा के पास पहुँच जाती हूँ...* मीठे मीठे बाबा संगमयुग के एक-एक सेकंड के अनमोल समय के महत्व को समझा रहे हैं...

❊ *प्यारे बाबा टाइम वेस्ट ना करने की समझानी देते हुए कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... ईश्वरीय यादो में महकने और खिलने के खुबसूरत लम्हों में सदा ज्ञान के सुरीले नाद से आत्माओ को मन्त्रमुग्ध करना है... सबका जीवन खुशियो से खिल उठे, सदा इस सुंदर चिंतन में ही रहना है... *ईश्वर पिता के साथ भरे इस मीठे समय को सदा यादो से ही संजोना है..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा एक बाप की याद में रह टाइम आबाद करते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मैं आत्मा आपकी यादो में दीवानी सी... *ज्ञान रत्नों की बौछार सदा साथ लिए, खुशियो के आसमाँ से, आत्माओ के दिल पर बरस रही हूँ...* सबको मीठे बाबा का परिचय देकर हर पल पुण्यो की कमाई में जीजान से जुटी हूँ..."

❊ *मीठे बाबा संगम युग की सुहावनी घड़ियों को सफल करने का राज बतलाते हुए कहते है:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... विश्व पिता के प्यार से लबालब, संगम का यह अनोखा अदभुत समय. संसार की व्यर्थ बातो में, भाग्य के हाथो से. यूँ रेत सा न फिसलाओ... *ज्ञानी त आत्मा बनकर ज्ञान की

झनकार पूरे विश्व को सुनाओ... ईश्वर पिता के साथ विश्व सेवा कर 21 जनमो का महाभाग्य पाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा ज्ञानी तू आत्मा बन बाबा के ज्ञान रत्नों को चारों ओर बांटते हुए कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... *मै आत्मा आपसे पाये अमूल्य रत्नों को पूरे विश्व में बिखेर कर सतयुगी बहार ला रही हूँ... हर पल यादो में खोयी हुई खुशियो में चहक रही हूँ...* और ज्ञानी आत्मा बनकर अपनी रूहानी रंगत से बापदादा को प्रत्यक्ष कर रही हूँ..."

❇ *मेरे बाबा मुझ पर वरदानों की रिमझिम बरसात करते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... सारे कल्प का कीमती और वरदानी समय सम्मुख है... जिसे कन्दराओं में जाकर ढूंढ रहे थे, दर्शन मात्र को व्याकुल थे... वो पिता दिलजान से न्यौछावर सा दिल के इतना करीब है... *जो चाहा भी न था वो भाग्य खिल उठा है... इस मीठे भाग्य के नशे में खो जाओ, सबको ऐसा भाग्यशाली बनाओ..."*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा सच्ची सच्ची रूहानी सेवाधारी बन सारे विश्व में खुशियों को बाँटती हुई कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा आपकी मीठी यादो में सच्चा सुख पाकर 21 जनमो की खुशनसीब बन गयी हूँ... और यह ख़ुशी हर घर के आँगन में उंडेल रही हूँ... *सारा विश्व खुशियो से भर जाये... हर दिल ईश्वरीय प्यार भरा मीठा और सच्चा सुख पाये... यह दस्तक हर दिल को दे रही हूँ..."*

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाहरमुखता में नही आना है*"

➳ _ ➳ अंतर्मुखता की गुफा में बैठ, एकांतवासी बन अपने शिव पिता के साथ मीठी - मीठी रूह रिहान करते, असीम आनन्द का अनुभव करके मैं रियलाइज करती हूँ कि कितना सुकून है इस अंतर्मुखता में! *आज दिन तक मैं इस बात से कितनी अनभिज्ञ थी। इसलिए बाहरमुखता में, भौतिक संसधानों में सुख तलाश कर रही थी*। शुक्रिया मेरे शिव पिता का जिन्होंने आ कर मुझे अंदर की इस खूबसूरत रूहानी यात्रा पर चलना सिखा कर ऐसे अथाह सुख का अनुभव करवाया। *तो अब मुझे अंतर्मुखी बन केवल अपने शिव पिता से ही सुनते, उनसे सदा मीठी - मीठी रूहरिहान करते इस असीम आनन्द का अनुभव निरन्तर करते रहना है*। बाहरमुखता में नही आना है।

➳ _ ➳ मन ही मन स्वयं से बातें करती अब मैं अपने सम्पूर्ण ध्यान को अपने सत्य स्वरूप पर एकाग्र करती हूँ और *अपने मौलिक गुणों और शक्तियों का अनुभव करते, अंतर्मुखता की एक ऐसी असीम आनन्दमयी शांन्तचित स्थिति में स्थित हो जाती हूँ जहां किसी भी प्रकार की कोई आवाज, शोरगुल यहां तक की संकल्पों की भी हलचल नही*। इस गहन शांति की अवस्था में स्थित होते ही मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूँ कि मुझ आत्मा से शांति के शक्तिशाली वायब्रेशन निकल कर चारों ओर वायुमंडल में फैल रहें है और आस - पास के वायुमंडल को शांत बना रहे हैं। *शांति की शक्तिशाली किरणों का एक शक्तिशाली औरा मेरे चारों तरफ निर्मित होता जा रहा है*।

➳ _ ➳ शांति के शक्तिशाली वायब्रेशन चारों और फैलाती मैं चैतन्य शक्ति आत्मा अब सहजता से देह का आधार छोड़ ऊपर आकाश की ओर जा रही हूँ। *अंतरिक्ष को पार करके, उससे ऊपर सूक्ष्म लोक से भी परें मैं जागती ज्योति अब स्वयं को एक ऐसी दुनिया में देख रही हैं जहां लाल प्रकाश ही प्रकाश है। चारों और चमकती हुई जगमग करती मणियां दिखाई दे रही हैं*। देह और देह से जुड़ी हर वस्तु का यहां अभाव है। केवल रूहें ही रूहें हैं इसलिए रूह रिहान भी आत्मा का आत्मा से। सम्बन्ध भी आत्मिक और दृष्टिकोण भी रूहानियत से भरा।

➳ _ ➳ चैतन्य मणियों की जगमग करती इस अति सुंदर दुनिया में अब मैं स्वयं को महाज्योति अपने शिव पिता के सम्मख देख रही हूँ जिनसे निकल रही

प्रकाश की अनन्त किरणे पूरे परमधाम को प्रकाशित कर रही है। *मन्त्रमुग्ध हो कर इस अति सुंदर नजारे को मैं देख रही हूँ और अनुभव कर रही हूँ कि महाज्योति मेरे शिव पिता से आ रही अनन्त गुणों और शक्तियों की ये किरणें मुझे अपनी ओर खींच रही हैं*। धीरे - धीरे मैं आत्मा अब उनकी ओर बढ़ रही हूँ। उनके समीप पहुंच कर उन्हें टच करके उनके समस्त गुणों और सर्वशक्तियों को अब मैं स्वयं में भर रही हूँ।

➳ _ ➳ बाबा के सर्वगुणों और सर्वशक्तियों को स्वयं में भरकर मैं स्वयं को सर्वशक्तियों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ और सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप बन कर वापिस साकारी दुनिया में लौट रही हूँ। *अपने साकारी तन में अब मैं भृकुटि सिहांसन पर विराजमान हूँ और फिर से अपनी साकार देह का आधार ले कर इस कर्मभूमि पर अपना पार्ट बजा रही हूँ*। किन्तु अब मैं सदैव अंतर्मुखता में रहते केवल अपने शिव पिता से सुनते, हर सेकण्ड उन्हें अपने साथ अनुभव करती हूँ।

➳ _ ➳ *सर्व सम्बन्धो का सुख बाबा से लेते अपने हर संकल्प, बोल और कर्म में बाबा की याद को बसा कर, अंतर्मुखता की गुफा में बैठ एकांतवासी बन अपने प्यारे बाबा के सानिध्य में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति अब मैं सदैव कर रही हूँ और बाहरमुखता से सहज ही दूर होती जा रही हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं स्वराज्य की स्मृति द्वारा तूफानों को तोहफा बनाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं अखण्ड सुख शांति सम्पन्न आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 9 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव भरपूरता का अनुभव करती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव दुआयें देती और दुआयें लेती हूँ ।*
✺ *मैं संतुष्ट आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

∬ 10 ∬ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बापदादा के पास भी *दिल का चित्र निकालने की मशीनरी* है। यहाँ एक्सरे में यह स्थूल दिल दिखाई देता है ना। तो *वतन में दिल का चित्र बहुत स्पष्ट दिखाई देता है।* कई प्रकार के छोटे-बड़े दाग, ढीले स्पष्ट दिखाई देते हैं।

➳ _ ➳ बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि बापदादा का बच्चों से प्यार होने के कारण एक बात अच्छी नहीं लगती। वह है - मेहनत बहुत करते हैं। *अगर दिल साफ हो जाए तो मेहनत नहीं, दिलाराम दिल में समाया रहेगा* और आप दिलाराम के दिल में समाये हुए रहेंगे। दिल में बाप समाया हुआ है। किसी भी रूप की माया, चाहे सूक्ष्म रूप हो, चाहे रायल रूप हो, चाहे मोटा रूप हो, किसी भी रूप से माया आ नहीं सकती। स्वप्न मात्र, संकल्प मात्र भी माया आ नहीं सकती। तो मेहनत मुक्त हो जायेंगे ना! *बापदादा मन्सा में भी मेहनत मुक्त देखने चाहते हैं। मेहनत मुक्त ही जीवनमुक्त का अनुभव कर सकते हैं।* होली मनाना माना मेहनत मक्त. जीवनमक्त अनभति में रहना।

✺ *ड्रिल :- "दिल साफ रख मेहनत मुक्त बनना"*

➳ _ ➳ *मैं त्यागी और तपस्वी ब्राह्मण आत्मा कमलासन पर विराजमान* हूँ... भृकुटि सिंहासन पर विराजमान मुझ आत्मा से *चारो ओर रंगबिरंगी गुणों और शक्तियों की किरणें निकलकर समस्त संसार में* फैल रही है... सारा संसार जड़, चैतन्य और जंगम सहित सर्वस्व इन गुणों और शक्तियों से भरपूर हो रहा हैं... अब *मैं अपने फरिश्ता स्वरूप में उड़ चलती हूँ सूक्ष्मवतन की ओर...* अपने प्राणप्रिय बापदादा के पास... बापदादा के विशाल आकारी शरीर के समक्ष *मैं फरिश्ता एक नन्हा सा बालक हूँ... बापदादा की शक्तिशाली किरणें मुझमे शक्ति भरते हुए तीनो लोकों में फैल रही हैं...* बापदादा मुझे अपने कंधो पर बिठाकर पूरे सूक्ष्मवतन की सैर करा रहे है...

➳ _ ➳ रास्ते में आनेवाले चित्रो को मैं फरिश्ता देख रहा हूँ... चांद सितारों की उपर की इस दुनिया की रोशनी को अपने अंतर में समाकर हर्षित हो रहा हूँ... फिर मैं देख रहा हूँ की *बापदादा के पास दिल का चित्र निकालने की मशीनरी है...* जिसमे दिल के... अंतर मन के सारे संकल्प बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहे है... कई प्रकार के श्रेष्ठ संकल्प और छोटे, बडे दाग भी स्पष्ट दिखाई दे रहे है... *मैं देख रहा हूँ अपनी ही कमी कमजोरी के चित्र को...* कभी तो मेरे दिल में कोई आत्मा आती दिखाई दे रही है तो कभी कोई... कभी कही किसी से लगाव झुकाव होने कारण दिल से बापदादा निकल जाते तो कही घृणा नफरत के कारण...

➳ _ ➳ कभी पांच तत्वो से निर्मित देह अपनी तरफ खिंचता तो कभी सूक्ष्म कर्मेन्द्रियाँ आकर्षित करती... कभी वो साधन अपनी तरफ खिंचते जिसको मैं अपनी साधना का आधार बना बैठा हूँ... इस तरह *भिन्न भिन्न प्रकार के चित्र दिखाई दे रहे है मेरे दिल में... जो दिलाराम बापदादा को मुझसे दूर कर रहे है...* अब मुझ फरिश्ते को ज्ञात हुआ है की मुझे बाप को अपने दिल में समाने के लिए इतनी मेहनत क्यों लग रही हैं... बापदादा का मुझसे बहुत प्यार होने के कारण उनको मेरी यह एक बात अच्छी नहीं लगी की मैं इतनी मेहनत कर रहा हूँ... *बापदादा उन चित्रो के एकदम नजदीक जा रहे है...* बिलकल उनके सामने

आकर हम खडे हो गए...

➳ _ ➳ *बापदादा अपनी किरणों से और अपने वायब्रेशन्स के माध्यम से दिल के सारे छोटे-बड़े दाग को साफ करते जा रहे है...* एक एक दाग को बापदादा ने मिटा कर दिल को एकदम साफ कर दिया... *अब दिल साफ हो गया तो मैं फरिश्ता मेहनत मुक्त हो गया... एकदम हलकापन अनुभव हो रहा है...* डेड साइलेन्स की अनुभूति हो रही है... *एक बाप दूसरा न कोई* दिल से यही गीत बज रहा है... अब दिल में इसी धुन का बसेरा है *मैं बाबा का और बाबा मेरा...* अब बिना मेहनत के मैं भी दिलाराम के दिल में और दिलाराम भी मेरे दिल में... *अब माया चाहे कोई भी रूप लेकर आए... चाहे सूक्ष्म रूप हो, चाहे रायल रूप हो, चाहे मोटा रूप हो... पल भर के लिए भी दिलाराम को दिल से हटा नहीं सकती...* स्वप्न मात्र, संकल्प मात्र भी माया आ नहीं सकती...

➳ _ ➳ *मनसा में भी एकदम मेहनत मुक्त अवस्था हो चुकी है...* अब मैं फरिश्ता बापदादा के कंधे से नीचे उतरकर बापदादा को धन्यवाद करता हुआ *वापस लौटता हूँ अपने कर्मक्षेत्र अपने सेवा स्थान पर...* मैं फरिश्ता शरीर में प्रवेश करने के बाद भी वही मेहनत मुक्त अवस्था का अनुभव कर रहा हूँ... इस अवस्था के कारण मुझे कोई भी कर्म करते हुए भी कर्म बंधन या कर्मेन्द्रियाँ अपनी तरफ आकर्षित नही कर पा रही... *मुझे कर्मातीत अवस्था की अनुभूति हो रही है... इस कारण मुझे जीवनमुक्ति का अनुभव हो रहा है...* इस जीवनमुक्त अवस्था में *दिलाराम को अपने दिल में समाए हुए... मैं आत्मा सच्ची सच्ची होली मना रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔